एम.एच.डी.– 4
नाटक और अन्य गद्य

एम.ए.हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने नाटकों और अन्य गद्य विद्याओं का अध्ययन किया है। चार नाटक और चौदह गद्य रचनाओं पर कुल 26 इकाइयॉ हैं। इनके अतिरिक्त आपकों 'हिंदी गद्य विवेचना' के अंतर्गत कई आलोचनात्मक लेख भी दिए गए हैं। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक–एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगें।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्न पत्र का ढॉचा कमोबेश एक–सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ गद्याशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगें
- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न रचना की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य चरित्र–चित्रण, भाषा, शिल्प महत्व और अन्य रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं। नाटक से संबंधित सवालों में रंगमंच प्रस्तुति और अभिनेयता के बारे में भी सवाल होंगे।
- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियॉं करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।
- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोडः एमएचडी–4
सत्रीय कार्य कोडः एमएचडी–4/टीएमए/2019–20
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः **10X 4= 40**

क) सरल युवक! इस गतिशील जगत् में परिवर्तन पर आश्चर्य! परिवर्तन रूका कि महापरिवर्तन प्रलय –हुआ परिवर्तन ही सृष्टि हे, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है, निश्चेष्ट शांति मरण है। प्रकृति क्रियाशील है। समय पुरूष और स्त्री की गेंद लेकर दोनों हाथ से खेलता है। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की समष्टि अभिव्यक्ति की कुंजी है। पुरूष उछाल दिया जाता है, उत्क्षेपण होता है। स्त्री आकर्षण करती है। यही जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है।

ख) ''हम सवालात पैदा करते हैं, जो समय और ऋतुओं का दर्पण दमकते हुए हीरों की तरह काट देते हैं।'' सवालात दमकते हुए हीरे की तरह हैं, जो हमारे जीवनरूपी दर्पण के सुख–चैन और सौंदर्यबोध को काट देते हैं। सवालातों के समाधान में हम उलझ जाते हैं, और सदैव उलझे रहते हैं, कभी सुख की सांस नहीं ले पाते।

ग) हर–एक के पास एक–न–एक वजह होती है। इसने इसलिए कहा था। उसने उसलिए कहा था। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो जब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ? हर वक्त की धतकार, हर वक्त की कोंच, बस यही कमाई है यहाँ मेरी सालों की?

घ) आज मेरा विज्ञान सब मिथ्या ही सिद्ध हुआ।
सहसा एक व्यक्ति
ऐसा आया जो सारे
नक्षत्रों की गति से भी ज्यादा शक्तिशाली था।
उसने रणभूमि में
विषादग्रस्त अर्जुन से कहा–
''मैं हूँ परात्पर।
जे कहता हूँ करो
सत्य जीतेगा
मुझसे लो सत्य, मत डरो।''

2. स्कंदगुप्त की रचनाशीलता का आधार क्या है, और इसने नाटक को किस प्रकार प्रभावित किया। 10

3. लोभ और प्रीति निबंध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 10

4. कुटज निबंध पर लेखकीय व्यक्तित्व के प्रभाव की समीक्षा कीजिए। 10

5. ठकुरी बाबा के माध्यम से महोदवी वर्मा ने किन–किन सामाजिक प्रश्नों को उठाया है स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिएः– 5X4= 20

(क) प्रतापनारायण मिश्र का लेखनीय व्यक्तित्व

(ख) व्यंगकार हरिशंकर परसाई

(ग) महादेवी वर्मा

(घ) अमृतराय और कलम का सिपाही

——